शीतलाष्टक

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

शीतलाष्टक

प्रकार	अष्टकम्
देवता	शीतला माता
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	शाक्त
स्रोत	बृहत्स्तोत्ररत्नाकर — निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, 1912 — No. 82, printed pp. 178–179 (djvu 186–187)
आभार	पाठ: बृहत्स्तोत्ररत्नाकर (निर्णयसागर प्रेस, 1912), संस्कृत विकिस्रोत (CC BY-SA 4.0); मुद्रित पृष्ठों पर पढ़ा गया और गीता प्रेस देवीस्तोत्ररत्नाकर तथा 1944 के कुम्भकोणम् मुद्रण से मिलाया गया। मिलान, सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Text in the public domain. OCR transcription of the 1912 Nirnaya Sagar print from Sanskrit Wikisource, CC BY-SA 4.0, rea

श्रीगणेशाय नमः ॥

śrīgaṇeśāya namaḥ ||

अस्य श्रीशीतलास्तोत्रस्य महादेव ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । शीतला देवता । लक्ष्मीर्बीजम् । भवानी शक्तिः । सर्वविस्फोटकनिवृत्तये जपे विनियोगः ।

asya śrīśītalāstotrasya mahādeva ṛṣiḥ | anuṣṭup chaṃdaḥ | śītalā devatā | lakṣmīrbījam | bhavānī śaktiḥ | sarvavisphoṭakanivṛttaye jape viniyogaḥ |

ईश्वर उवाच ।

īśvara uvāca |

वंदेहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगंबराम् ।

vaṃdehaṃ śītalāṃ devīṃ rāsabhasthāṃ digaṃbarām |

मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम् ॥ १ ॥

mārjanīkalaśopetāṃ śūrpālaṃkṛtamastakām || 1 ||

वंदेऽहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम् ।

vaṃde'haṃ śītalāṃ devīṃ sarvarogabhayāpahām |

यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयं महत् ॥ २ ॥

yāmāsādya nivarteta visphoṭakabhayaṃ mahat || 2 ||

शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्दाहपीडितः ।

śītale śītale ceti yo brūyāddāhapīḍitaḥ |

विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति ॥ ३ ॥

visphoṭakabhayaṃ ghoraṃ kṣipraṃ tasya praṇaśyati || 3 ||

यस्त्वामुदकमध्ये तु धृत्वा पूजयते नरः ।

yastvāmudakamadhye tu dhṛtvā pūjayate naraḥ |

विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥ ४ ॥

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

visphoṭakabhayaṃ ghoraṃ gṛhe tasya na jāyate || 4 ||

शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगंधयुतस्य च ।

śītale jvaradagdhasya pūtigaṃdhayutasya ca |

प्रनष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनौषधम् ॥ ५ ॥

pranaṣṭacakṣuṣaḥ puṃsastvāmāhurjīvanauṣadham || 5 ||

शीतले तनुजान्रोगान्नृणां हरसि दुस्त्यजान् ।

śītale tanujānrogānnṛṇāṃ harasi dustyajān |

विस्फोटकविदीर्णानां त्वमेकामृतवर्षिणी ॥ ६ ॥

visphoṭakavidīrṇānāṃ tvamekāmṛtavarṣiṇī || 6 ||

गलगंडग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम् ।

galagaṃḍagrahā rogā ye cānye dāruṇā nṛṇām |

त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यांति संक्षयम् ॥ ७ ॥

tvadanudhyānamātreṇa śītale yāṃti saṃkṣayam || 7 ||

न मंत्रो नौषधं तस्य पापरोगस्य विद्यते ।

na maṃtro nauṣadhaṃ tasya pāparogasya vidyate |

त्वामेकां शीतले धात्रीं नान्यां पश्यामि देवताम् ॥ ८ ॥

tvāmekāṃ śītale dhātrīṃ nānyāṃ paśyāmi devatām || 8 ||

मृणालतंतुसदृशीं नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् ।

mṛṇālataṃtusadṛśīṃ nābhihṛnmadhyasaṃsthitām |

यस्त्वां संचिंतयेद्देवि तस्य मृत्युर्न जायते ॥ ९ ॥

yastvāṃ saṃciṃtayeddevi tasya mṛtyurna jāyate || 9 ||

अष्टकं शीतलादेव्या यो नरः प्रपठेत्सदा ।

aṣṭakaṃ śītalādevyā yo naraḥ prapaṭhetsadā |

विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥ १० ॥

visphoṭakabhayaṃ ghoraṃ gṛhe tasya na jāyate || 10 ||

श्रोतव्यं पठितव्यं च श्रद्धाभक्तिसमन्वितैः ।

śrotavyaṃ paṭhitavyaṃ ca śraddhābhaktisamanvitaiḥ |

उपसर्गविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत् ॥ ११ ॥

upasargavināśāya paraṃ svastyayanaṃ mahat || 11 ||

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता ।

śītale tvaṃ jaganmātā śītale tvaṃ jagatpitā |

शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः ॥ १२ ॥

śītale tvaṃ jagaddhātrī śītalāyai namo namaḥ || 12 ||

रासभो गर्दभश्चैव खरो वैशाखनंदनः ।

rāsabho gardabhaścaiva kharo vaiśākhanaṃdanaḥ |

शीतलावाहनश्चैव दूर्वाकंदनिकृंतनः ॥ १३ ॥

śītalāvāhanaścaiva dūrvākaṃdanikṛṃtanaḥ || 13 ||

एतानि खरनामानि शीतलाग्रे तु यः पठेत् ।

etāni kharanāmāni śītalāgre tu yaḥ paṭhet |

तस्य गेहे शिशूनां च शीतलारुङ् न जायते ॥ १४ ॥

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

tasya gehe śiśūnāṃ ca śītalāruṅ na jāyate || 14 ||

शीतलाष्टकमेवेदं न देयं यस्यकस्यचित् ।

śītalāṣṭakamevedaṃ na deyaṃ yasyakasyacit |

दातव्यं च सदा तस्मै श्रद्धाभक्तियुताय वै ॥ १५ ॥

dātavyaṃ ca sadā tasmai śraddhābhaktiyutāya vai || 15 ||

इति श्रीस्कंदपुराणे शीतलाष्टकस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

iti śrīskaṃdapurāṇe śītalāṣṭakastotraṃ saṃpūrṇam ||

अर्थ

संक्षिप्त भावार्थ, अनुवाद नहीं। विनियोग (ऋषि महादेव, छन्द अनुष्टुप्, देवता शीतला) के बाद ईश्वर कहते हैं: मैं गर्दभ पर बैठी, दिगम्बरा, झाड़ू-कलश धारी, सिर पर सूप वाली शीतला देवी को प्रणाम करता हूँ; सब रोगों का भय हरने वाली को, जिनकी शरण से चेचक का बड़ा भय दूर होता है। ज्वर की जलन में 'शीतले शीतले' पुकारने वाले, या जल में उनकी प्रतिमा रखकर पूजने वाले के घर से यह भय दूर होता है। ज्वर से जले, दुर्गन्धयुक्त घावों वाले, दृष्टि खोते मनुष्य के लिए वे जीवन-औषधि कही गई हैं; शरीर के कठिन रोग हरती हैं और विस्फोटक से पीड़ितों पर अकेली अमृत बरसाती हैं; गलगण्ड आदि भयंकर रोग उनके ध्यान से नष्ट कहे गए हैं। हे शीतले, धात्री, आपके सिवा कोई औषधि, मन्त्र या देवता नहीं दिखता; नाभि और हृदय के बीच मृणाल-तन्तु-सी सूक्ष्म देवी का ध्यान करने वाले को मृत्यु-भय नहीं। हे शीतले, आप जगत् की माता, पिता और धात्री हैं — आपको नमस्कार। उनके वाहन के नाम हैं रासभ, गर्दभ, खर, वैशाखनन्दन, शीतलावाहन, दूर्वाकन्दनिकृन्तन; परम्परा में उनके सामने ये नाम पढ़ने से घर के बच्चों को यह रोग नहीं होता कहा गया है। स्तोत्र श्रद्धा-भक्ति से सुनना-पढ़ना चाहिए और केवल श्रद्धालु को देना चाहिए।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।